फिदल कास्त्रो__गाब्रिएल गार्सिया मार्केज

साल भर बाद फिदेल कास्त्रो 90 के हो जाएँगे। वे लंबे समय से बीमार हैं। करीब एक सदी का जीवन उनका हो रहा है। 20 वीं सदी के संघर्षों और यातनाओं और विडंबनाओं और उत्पातों के वे चुनिंदा चश्मदीदों में हैं। शीत युद्ध उपरांत विश्व की उथल-पुथल के दौर में गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सशक्त प्रवक्ता। क्यूबा मे समाजवाद के अनूठे प्रयोग के निर्माता और दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति और युद्धोन्मत राष्ट्रपतियों के विभिन्न कार्यकालों के साए में छोटे से क्यूबा को खड़ा रख पाने वाले साहसी योद्धा और राजनीतिज्ञ फिदेल कास्त्रो अब सक्रिय राजनीति से दूर हैं। सत्ता से अलग हैं लेकिन उनकी उपस्थिति , दबदबे और आधिपत्य और नवउदारवादी कब्जों से चोट खाई और सताई दुनिया के लिए अब भी सांत्वना और साहस का काम करती है।

पीढ़ियों के लिए फिदेल एक बड़े नायक रहे हैं। उनसे एक गहरा जुड़ाव दुनिया भर के लोग महसूस करते रहे हैं। फिदेल कास्त्रो के नायकत्व को सलाम करते हुए एक निबंध (पर्सनल पोट्रेट ऑफ फिदेल) लिखा है कास्त्रो के गहरे मित्र रहे जाने माने उपन्यासकार-पत्रकार गाब्रिएल गार्सिया मार्केज ने। मार्केज का ये पोट्रेट लेफ्ट वर्ल्ड से प्रकाशित 'फिदेल कास्त्रो : माई अरली इयर्स' से साभार लिया गया है। ये लंबी टिप्पणी पहली बार 1991 में ओशन प्रेस से इतावली पत्रकार गियानी मीना की किताब 'एन एनकाउंटर विद फिदेल' में बतौर प्रस्तावना प्रकाशित हुई थी। गियानी ने कास्त्रो का एक यादगार इंटरव्यू किया था जो रिकॉर्ड 17 घंटे तक चला था और राजनीतिक , कूटनीतिक और पत्रकारिता के हल्कों में जिसकी बड़ी धूम रही है। मार्केज के मुताबिक कास्त्रो के चुनिंदा मुकम्मल साक्षात्कारों में से ये एक था। वरना कास्त्रो का इंटरव्यू करने वाले अधिकांश विदेशी पत्रकार सवाल जवाब और आग्रहों की स्टारियोटाइप रूढ़ि से निकले ही नहीं। ...पेश है मार्केज के लिखे निबंध का एक अंश।

एक विदेशी आगंतुक को क्यूबा की सप्ताह भर की सैर कराने के बाद एक दिन फिदेल कास्त्रो ने कहा : ये आदमी कैसे इतना बोल सकता है - ये तो मुझसे भी ज्यादा बोलता है। साफ है कि फिदेल कास्त्रो बढ़ा-चढ़ाकर बोल रहा था - क्योंकि खुद उससे ज्यादा बोलने की आदत का दीवाना तो कोई होगा नहीं।

शब्द के प्रति उनकी श्रद्धा लगभग जादुई है। क्रांति के शुरूआती दिनों में, हवाना में उसके दाखिल होने के बामुश्किल हफ्ते भर बाद ही, उसने टीवी पर बिना रुके सात घंटे तक भाषण दिया था। ये विश्व रिकॉर्ड होगा। पहले कुछ घंटों में हवाना के लोग तो उस आवाज के सम्मोहन से परिचित नहीं थे, पारंपरिक अंदाज में उसे सुनने बैठ गए। लेकिन वक्त बीतने लगा तो वे अपने रोजमर्रा के कामों में लौट गए, एक कान अपने काम पर और दूसरा भाषण पर लगाए।

एक दिन पहले ही मैं पत्रकारों के एक दल के साथ कराकास से पहुँचा था। हमने अपने होटल के कमरों में वो भाषण सुनना शुरू किया। जब हम लिफ्ट में थे तब भी उसे सुन रहे थे, बिना रुके। उस टैक्सी में भी उसे सुनते रहे जो हमें शहरों के दौर पर ले गई। फूलों से लदे दालानों वाले कैफे में, एसी वाले बारों में और यहाँ तक कि वो भाषण सड़कों पर चलते हुए भी सुना जहाँ खुली खिड़कियों से रेडियो ऊँची आवाज में गूँज रहे थे। शाम तक उसका कहा एक शब्द भी गँवाए बिना हमारा दिन भर का कार्यक्रम पूरा हो चुका था।

हममें से जो लोग फिदेल कास्त्रो को पहली बार सुन रहे थे, उनका ध्यान दो चीजों ने खींचा। एक तो फिदेल की अपने श्रोताओं को लुभा देने की जबर्दस्त सामर्थ्य। और दूसरी उसकी आवाज की नजाकत। उसकी आवाज बैठी हुई थी जो कभी कभी महज एक साँसविहीन फुसफुसाहट जैसी रह जाती थी। उसके बैठे गले की आवाज को सुनकर एक डॉक्टर ने ये नतीजा निकाला कि अमेजन नदी जितने लंबे और धाराप्रवाह मैराथन भाषणों के बावजूद पाँच साल में कास्त्रो की आवाज चली जाएगी। कुछ ही समय बाद, अगस्त 1962 में आवाज में इस गड़बड़ी का पहला इशारा तब मिला जब अमेरिकी कंपनियों के राष्ट्रीयकरण का ऐलान करने वाले भाषण के बाद उसकी आवाज रुक गई। लेकिन ये एक अस्थायी धक्का था जो फिर नहीं आया। उसके बाद से छब्बीस साल बीत गए। फिदेल कास्त्रो अभी अभी 61 का हुआ है। और उसकी आवाज में हमेशा से जैसे अनिश्चय बना हुआ है, लेकिन मौखिक शब्दों के बारीक शिल्प में ये उसका सबसे उपयोगी और सशक्त औजार है।

एक सामान्य बातचीत के लिए तीन घंटे तो उसका एक अच्छा औसत है। वो अपने ऑफिस में बँधे रहने वाले किसी अकादमिक लीडर की तरह नहीं है। वो जहाँ समस्याएँ आती हैं वहीं उनको दुरुस्त करने की कोशिश करता है। अपनी खटारा कार में उसे देखा जा सकता है, उसके आजू-बाजू मोटरसाइकिलों की गर्जना नहीं होती, वो हवाना के सुनसान इलाकों में अकेले निकल जाता है। कभी किसी सड़क के किनारे, दिन के किसी भी पहर में। कभी कभी भोर को भी। इन सब बातों से उसके बारे में किंवदंती चल पड़ी कि वो एक अकेला यायावर है, अव्यवस्थित और स्वच्छंद अनिद्रा रोगी, जो किसी भी वक्त मिलने के लिए धमक सकता है और अपने मेजबान को सुबह तक जगाए रख सकता है।

क्रांति के शुरूआती दिनों में इस छवि में कुछ सच्चाई तो थी। अपने बहुत लंबे भाषणों की वजह से ही नहीं, इसलिए भी क्योंकि उसका कोई वास्तविक घर नहीं था, कोई दफ्तर नहीं था, 15 साल से ज्यादा समय तक उसका कोई तय डेली रूटीन नहीं था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। अपने विशिष्ट उतावलेपन को बरकरार रखते हुए उसने अपनी जिंदगी को आखिरकार एक निश्चित ढर्रे में ढाला है। पहले, वो बिना पलक झपकाए रात और दिन काट लेता था और उसे कोई थकान नहीं लगती थी, लेकिन अब वो बेखटके छह घंटे सोता है। किस समय, ये वो खुद भी नहीं जानता। रात के दस बजे भी या अगली सुबह सात बजे भी। जैसा काम रहे।

जिस क्रूर सहजता से उसका वजन बढ़ा है उसके चलते वो एक स्थायी आहार का रुख करने को विवश हुआ। उसकी विराट भूख और पाक कला के प्रति उसकी अदम्य चाहत को देखते हुए यह एक बहुत बड़ा त्याग है। वो एक तरह के वैज्ञानिक जूनून के साथ कोई रेसिपी तैयार करता है। एक रविवार, खुद को थोड़ा ढील देते हुए उसने बढ़िया लंच निपटाया। उसमें आइसक्रीम के 18 स्कूप भी शामिल थे। वो शारीरिक रूप से फिट रहता है। कुछ घंटे जिमनास्टिक करता है और तैराकी भी। रोज एक गिलास व्हिस्की का लेता है और वो भी लगभग अदृश्य घूँट भरते हुए। और स्पेगैटी (एक तरह की नूडल) के प्रति अपनी कमजोरी पर उसने काबू पा लिया है। क्षणिक लेकिन प्रचंड क्रोध भी अब बीते दिनों की बात है और अपने बुरे मूड को एक अदम्य धीरज के साथ खत्म कर देना उसने सीख लिया है।

कुल मिलाकर : सख्त अनुशासन। लेकिन किसी भी स्थिति में यह नाकाफी है। ये ध्यान में रखते हुए कि वक्त की अवश्यंभावी किल्लत एक अनियमित शेड्यूल लाद देती है। और कल्पनाशीलता का जोर उसे किसी भी पल जीत सकता है। उसके साथ बैठने पर आपको पता होता है कि आप कहाँ से शुरू करेंगे लेकिन ये कभी नहीं जान सकते हैं कि खत्म आप कहाँ पर करेंगे। किसी एक रात ये कोई असामान्य बात नहीं है कि आप खुद को एक गुप्त ठिकाने की ओर जाते विमान में बैठा पाएँ, किसी शादी में शरीक हो रहे हों, समंदर में लॉबस्टर पकड़ रहे हों या कामागाई में फ्रेंच चीज चख रहे हों।

बहुत समय पहले उसने कहा था : 'काम करना सीखो लेकिन आराम करना भी सीखो। ये उतना ही महत्वपूर्ण है।' लेकिन आराम के उसके तरीके कुछ ज्यादा ही मौलिक हैं। और जाहिर है इसमें बातचीत भी शामिल है। एक बार आधी रात के करीब वो एक अत्यंत गहन काम को बीच में छोड़कर, थकान के स्पष्ट लक्षण दिखाता हुआ, पौ फटने से पहले ही दो घंटे तैर कर पूरी तरह फ्रेश होकर लौट आया।

निजी दावतें उसके किरदार से मेल नहीं खाती। वो उन दुर्लभ क्यूबाइयों में से है जो न तो गाते हैं न नाचते हैं। जिन कुछ दावतों में वो शामिल भी होता है उसका स्वरूप उसके पहुँचते ही बदल जाता है। शायद उसे इस बात का अंदाजा नहीं है कि उसकी मौजूदगी का कैसा दबदबा कायम होता है। एक ऐसी उपस्थिति जिसमें पूरी की पूरी स्पेस भर जाती है। जबकि वो न तो उतना लंबा और भीमकाय है जैसा कि वो पहली नजर में दिखता है। उसके सामने मैंने ऐसे बहुत से लोगों को अपना संतुलन खोते देखा है जो खुद को लेकर सुनिश्चित होने का दावा करते हैं। वे खुद को स्थिर दिखाने की कोशिश करते हैं या कॉन्फिडेंस की अतिरंजित हवा खींच रहे होते हैं। असल में वो भी उनकी ही तरह त्रस्त रहता है और कोई नोटिस न कर ले इसकी कोशिश करता रहता है। मैं हमेशा मानता रहा हूँ कि अपने कामों के बारे में बोलते हुए वो बहुवचन ही इस्तेमाल करता है (हमने किया हमने सोचा जैसे) और ये जितना दिखता है उतना प्रभावशाली तरीका नहीं, बल्कि अपने शर्मीलेपन को पर्दे में रखने का उसका ये एक पोएटिक लायसेंस है।

फिर क्या होता है। अनिवार्य रूप से नाच बाधित हो जाता है, गाना रुक जाता है। खाना किनारे कर दिया जाता है। और भीड़ उसके इर्दगिर्द जमा हो जाती है बातचीत के लिए। जो फौरन ही शुरू हो जाती है। इस स्थिति में वो कितनी भी देर रह सकता है। खड़ा हुआ, बिना कुछ खाए पिए। कभी कभी, बिस्तर पर जाने से पहले, वो बहुत रात किसी घनिष्ठ मित्र के दरवाजे पर दस्तक देगा, बिना उसे बताए पहुँच जाएगा, और कहेगा कि वो बस पाँच मिनट के लिए आया है। वो इस बात को इतनी निष्कपटता से कहता है कि इस चक्कर में बैठता भी नहीं। धीरे धीरे, वो नई बातचीत से उत्तेजित हो उठता है और कुछ समय बाद वो आरामकुर्सी पर ढेर हो जाता है और पाँव फैलाते हुए कहता है : 'मैं खुद को नया महसूस कर रहा हूँ।' उसका यही तरीका है : बात करते करते थक जाना और बातों में ही लौटकर आराम हासिल कर लेना।

एक बार उसने कहा : 'अपने अगले जन्म में, मैं लेखक होना चाहता हूँ'। वास्तव में, वो अच्छा लिखता है और वो उसमें आनंद भी लेता है, कार में भी उसके पास एक नोट बुक रहती है, कुछ याद आने पर फौरन उसे लिख लेता है और कभी कभी निजी चिट्ठियाँ लिखता है। साधारण कागजों की वे कॉपियाँ नीले रंग के प्लास्टिक से लिपटी होती हैं, और साल दर साल उसकी निजी फाइलों का हिस्सा बनती रही हैं। उसकी हैंडराइटिंग छोटी और उलझी हुई है, यूँ पहली नजर में वो किसी स्कूली बच्चे की राइटिंग जैसी लगती है। वो किसी पेशेवर की तरह लेखन पर ध्यान देता है। वो वाक्य को कई बार संशोधित करता है। उसे काटता है, फिर से हाशिए पर लिखता है, और उसे जो चाहिए जब तक वो न मिल जाए तब तक उसके लिए ये कोई असाधारण बात नहीं है कि कई कई दिनों तक सही शब्द की तलाश करेगा, डिक्शनरियाँ टटोलेगा और इधर उधर तफ्तीश करता रहेगा।

पिछले कुछ समय से वो सार्वजनिक सभाओं में समय पर पहुँच रहा है। और उसके भाषणों की मियाद ऑडियंस के मूड पर निर्भर करती है। शुरूआती वर्षों के अनंत भाषण, किंवदंती बन चुके अतीत का हिस्सा हैं, क्योंकि बहुत कुछ जो उस समय समझाया जाना था वो समझा जा चुका है। और फिदेल कास्त्रो की स्टाइल भी खुद अब कई सारे सत्रों की भाषण कला के प्रशिक्षण के बाद संक्षिप्त हो गई है। उसे कभी भी कम्युनिस्ट रूढ़िवाद के कुट्टी (पेपिर मैच) सरीखे नारों को दोहराते नहीं सुना गया है। न ही वो सिस्टम के रस्मी जुमलों का इस्तेमाल करता है। वो उस फासिल भाषा से दूर है जो बहुत पहले यथार्थ से अपना संपर्क खो चुकी है और स्तुतिगान और स्मारक निर्माण में व्यस्त पत्रकारिता के साथ जिसका घनिष्ठ संबंध है। वो भाषा जिसका इरादा कुछ स्पष्ट करने के बजाय छिपा लेने का ही लगता है। फिदेल आला दर्जे का गैर-हठधर्मी है। उसकी रचनात्मक कल्पनाशीलता मतांतरों की खाई के ऊपर मंडराती रहती है। वो दूसरों की कही बातों को बहुत कम कोट करता है, न बातचीत में और न ही किसी मंच से। वो सिर्फ खोसे मार्ती के कथन ही कोट करता है जो उसका पसंदीदा लेखक है।

सीधे संपर्क पर उसका पक्का यकीन है। कठिनतम भाषण भी ठेठ बतकही जैसे लगते हैं, जैसे कि यूनिवर्सिटी के दालान में छात्रों से क्रांति के बारे में बातचीत कर रहा हो। भीड़ के बीच से कोई उसे पुकार

लेता है, खासकर हवाना से बाहर ये कोई असामान्य बात भी नहीं कि किसी पब्लिक मीटिंग में कोई उससे बहस करने लगे और शोरशराबा हो जाए। उसके पास हर अवसर के लिए एक भाषा है। और समझाने के विभिन्न तरीके। निर्भर करता है कि वो किसके साथ है - वे कामगार हैं, या किसान, छात्र, नेता, लेखक या विदेशी आगंतुक। वो उनमें से हरेक से उनके लेवल पर बात कर लेता है। उसके पास विभिन्न सूचनाओं का भंडार है। और वो किसी भी माध्यम में आसानी से आवाजाही कर लेता है। लेकिन उसकी शख्सियत इतनी जटिल और अप्रत्याशित है कि एक ही मुलाकात में हर कोई उसके बारे में अपना एक अलग इंप्रेशन बना सकता है।

एक बात तै है : कहीं भी हो, किसी भी रूप में किसी के भी साथ, फिदेल कास्त्रो की जीत पक्की है। हार के सामने उसका रवैया एक निजी तर्क से संचालित है : हार नहीं माननी है। वो बहस का रुख जब तक अपने पक्ष में नहीं मोड़ लेता उसे क्षण भर का भी चैन नहीं पड़ता है। लेकिन जो भी मुद्दा हो और जहाँ भी हो, ये सब होता है कभी न खत्म होने वाली बातचीत के जरिए।

वो ऑडियंस की पसंद के विषय पर बोल सकता है। लेकिन आमतौर पर वही किसी एक विषय पर अपनी ऑडियंस को संबोधित करता है। ऐसा उन मौकों पर ज्यादा होता है जब उसके दिमाग में कोई विचार पक रहा होता है और वो उसे परेशान कर रहा होता है। किसी चीज की तह तक जाने में उससे ज्यादा जुनूनी तो कोई नहीं होता। छोटा या बड़ा कोई भी ऐसा प्रोजेक्ट नहीं है जिसे लेकर उसमें भीषण जुनून न हो। प्रोजेक्ट माकूल न हो तो ये जुनून तब और भी प्रचंड हो उठता है। ऐसे मौकों पर ही वो सबसे ज्यादा अच्छा दिखता है, बढ़िया मूड में रहता है और उमंग से भरा रहता है। फिदेल को जानने का दावा करने वाले एक शख्स ने उससे कहा : 'जरूर कुछ भारी गड़बड़ है, तुम्हारा चेहरा दमक रहा है।'

वैसे कुछ साल पहले फिदेल से पहली बार मिले एक विदेशी ने मुझसे कहा : 'फिदेल बूढ़ा हो गया है, कल रात वो एक ही विषय पर सात बार लौट लौट कर आया।' मैंने उस विदेशी को बताया कि ये लगभग उन्मादी दोहराव उसके काम करने का एक तरीका है। मिसाल के लिए लातिन अमेरिका को विदेशी कर्ज का मुद्दा उसकी बातों में पहली बार करीब दो साल पहले आया था, और तब से वो विचार विकसित हो रहा है। फैल रहा है, और गंभीर बन रहा है और वो करीब करीब एक दुःस्वप्न का रूप ले चुका है। पहली बार जो बात उसने किसी साधारण गणितीय नतीजे की तरह कही और वो ये थी कि ये कर्ज लौटाया नहीं जा सकता है। धीरे धीरे, उस साल क्यूबा के अपने तीन दौरों में मैंने उस विषय पर उसके ताजा विचारों को एक साथ रखकर देखा : उन देशों की अर्थव्यवस्थाओं पर कर्ज के नतीजे, उसके राजनैतिक और सामाजिक प्रभाव, अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर उसका निर्णायक असर और एकीकृत लातिन अमेरिका नीति के लिए उसका क्षेत्रीय महत्व। आखिरकार फिदेल ने हवाना में विशेषज्ञों की एक अहम बैठक बुलाई और वहाँ एक भाषण दिया जिसमें उसने अपनी पुरानी बातों के महत्वपूर्ण बिंदुओं में से कुछ भी नहीं छोड़ा। तब तक उसके पास एक समग्र दृष्टि आ गई थी, आने वाले वक्त में ही जिसकी झलक देखी जा सकती थी।

मुझे लगता है कि राजनीतिज्ञ के रूप में उसका सबसे अद्भुत गुण है किसी एक खास समस्या को उभरते हुए देख पाना, उसे समझना, और उसके दूरस्थ निष्कर्षों में झाँक लेना मानो वो हिमखंड का उभरा हुआ हिस्सा ही नहीं देख रहा हो बल्कि पानी के नीचे का उसका अधिकांश हिस्सा भी देख पा रहा हो। लेकिन उसे ये गुण किसी अंतर्ज्ञान से नहीं बल्कि विकट और अटल तर्कबुद्धि से मिला है। एक मेहनतकश संभाषी उसकी बातों में प्रकट किसी विचार के भ्रूण को खोज सकता है, वो कई महीनों तक निरंतर बातचीत के सिलसिलों में उसके क्रमिक विकास को फॉलो कर सकता है। और आखिरकार अपने समग्र रूप में वो उस विचार को सार्वजनिक किया जाता हुआ भी देख सकता है, जैसा कि मैंने विदेशी कर्ज वाले मुद्दे में देखा।

इस तरह की मौखिक चक्की को जाहिर है सूचना के निर्बाध प्रवाह की मदद भी चाहिए - अच्छी तरह चबाई और पचाई हुई सूचना। उसकी सर्वोच्च सहायक है उसकी स्मृति और सूचना संग्रह का ये काम शुरू होता है जगने के साथ। दुनिया भर की खबरों के 200 पन्नों के साथ उसका नाश्ता होता है। दिन भर, अपनी अनवरत गतिशीलता के बावजूद, उसे अहम सूचनाएँ मुहैया कराई जाती हैं। उसका खुद का आकलन है कि हर रोज उसे करीब 50 दस्तावेज पढ़ने होते हैं। उसके दफ्तरी कामकाज की रिपोर्टें और उससे मिलने वालों की रिपोर्टें भी इसमें जोड़ दें, और वो सब भी जो उसकी अनंत जिज्ञासा के दायरे में आता है।

उसका सूचना का दूसरा जीवंत स्रोत जाहिर है किताबें हैं। उसके आलोचक उसकी शख्सियत के जिस पहलू को अलग कर उसकी छवि बनाते हैं वो ये है कि वो एक अगाध पाठक है। कोई इस बात को नहीं समझा सकता कि वो इतना सब और इतनी जल्दी पढ़ लेने का समय आखिर कैसे निकाल लेता है। क्या तरीके इस्तेमाल करता है। हालाँकि वो जोर देता है कि इसमें ऐसी कोई विशेष बात नहीं है। सुबह खुलने से पहले वो कोई किताब शुरू करता है और अगली सुबह उस पर टिप्पणी करता है। वो अंग्रेजी पढ़ता है लेकिन बोलता नहीं। ज्यादातर वो स्पानी पढ़ना चाहता है। और किसी भी वक्त ऐसे किसी भी कागज को पढ़ने के लिए हमेशा तत्पर है जिस पर अक्षर अंकित हों। जो उसके हाथ लग जाए। कोई एकदम हाल की किताब जिसका अनुवाद भी न हुआ हो वो उसे पढ़ने के लिए उसका अनुवाद करा देता है। एक परिचित डॉक्टर ने उसे ऑर्थोपेडिक्स पर अपनी किताब भेजी। वो पढ़ेगा भी, ये न जानते हुए। लेकिन हफ्ते भर बाद ही फिदेल की टिप्पणियों की लंबी सूची डॉक्टर के पास पहुँच गई। वो आर्थिक और ऐतिहासिक विषयों का आदतन पाठक है। वो साहित्य का भी अच्छा पाठक है और उसे नजदीकी से फॉलो करता है।

फिर भी उसके लिए सूचना का सबसे फौरी और सबसे कारगर स्रोत संवाद ही है। किसी चीज के बारे में पूछते चले जाने की उसकी आदत रूसी गुड़िया मात्र्युश्का से मिलती जुलती है जिसके अंदर उसी तरह की एक छोटी गुड़िया निकलती है, फिर उसके अंदर एक और छोटी गुड़िया और आखिरकार सबसे छोटी गुड़िया रह जाती है। गुड़िया के भीतर गुड़िया की तरह वो एक के बाद एक सवाल पूछता जाता है तत्क्षण बौछारों की तरह जब तक कि वो क्यों के क्यों का आखिरी क्यों नहीं जान लेता।

अपने पूर्वजों की भूमि स्पेन से उसे एक खास लगाव रहा है। भविष्य के लातिन अमेरिका का उसका विजन बोलीवार और मार्टी जैसा ही है। दुनिया की नियति को प्रभावित करने की क्षमता रखने वाला एक अखंड और स्वायत्त समुदाय। लेकिन क्यूबा के बाद जिस देश को वो सबसे ज्यादा जानता है वो है अमेरिका। वो उसके लोगों की प्रकृति से पूरी तरह वाकिफ है, उसकी सत्ता के ढाँचों से, उसकी सरकारों के अप्रत्यक्ष इरादों से। और इस सबसे उसे नाकेबंदी के अनवरत तूफान से जूझने में मदद मिली है। अमेरिकी सरकार के प्रतिबंधों के बावजूद मियामी और हवाना के बीच कमोबेश एक उड़ान रोज है। और रोजाना अमेरिका से कोई न कोई क्यूबा आता ही रहता है - विशेष विमान से या निजी विमान से।

चुनावों के कुछ पहले अमेरिका के दोनों दलों के राजनीतिज्ञों की आवाजाही बेतहाशा बढ़ जाती है। फिदेल कास्त्रो जितने लोगों से संभव है मिलता है, वो ये सुनिश्चित करता है कि उनकी आवभगत ठीक से हो, उन्हें पूरा वक्त देता है कि नई सूचनाओं का बहुत सारा आदान प्रदान हो सके। असल में ये मुलाकातें एक तरह का संवाद-उत्सव बन जाती हैं। वो उन्हें अपने देश के बारे में कुछ सच्चाइयाँ बताता है और उनकी बातों को भी सहृदयता और सम्मान से सुनता है। जो लोग शत्रुता के प्रचार भाव से मिलते हैं कि वे किसी दुर्दांत अधिनायक से मिल रहे हों, उनके सामने अपना असली चेहरा दिखाते हुए उसे बड़ा आनंद मिलता है। इस तरह का इंप्रेशन वो देता है। एक अवसर पर, अमेरिकी कांग्रेस के एक दल और यहाँ तक कि एक पेंटागन अधिकारी के सामने उसने इस बात का बड़ा ही वास्तविक खाका खींचा कि कैसे उसके गालिजियाई (गालिजिया : स्पेन का एक भूभाग) पूर्वजों और उसके धार्मिक गुरुओं ने उसके भीतर कुछ ऐसे नैतिक सिद्धांत भरे हैं जो उसकी शख्सियत के निर्माण में बहुत उपयोगी साबित हुए हैं। अपनी बात के आखिर में उसने कहा : 'मैं एक ईसाई हूँ।'

ऐसा कहते ही मानो कोई बम गिरा। मुलाकात अगले दिन सुबह तक चली। सांसदों के दल में सबसे ज्यादा अनुदार (कंजरवेटिव) समझे जाने वाले एक सांसद ने हैरानी भरी एक राय पेश की। उसके मुताबिक वो मानता था कि लातिन-अमेरिका और यूनाइटेड स्टेट्स के बीच सबसे प्रभावशाली मध्यस्थ अगर कोई हो सकता है तो वो फिदेल कास्त्रो हैं।

क्यूबा जाने वाला हर व्यक्ति ये उम्मीद करता है कि उसे हर संभव हाल में फिदेल से मिलने का मौका मिलेगा। हालाँकि कुछेक लोग निजी साक्षात्कार का ख्वाब भी देखते हैं, खासकर विदेशी पत्रकार। वे अपना काम पूरा नहीं समझते जब तक कि उन्हें फिदेल से इंटरव्यू की ट्रॉफी हासिल नहीं हो जाती। हवाना के होटलों में हमेशा कोई न कोई पत्रकार आकर टिकता है। इंटरव्यू के इंतजार में। इस समय इंटरव्यू के लिए करीब 300 आवेदन आए हुए हैं।

आखिरकार बहुत कम इंटरव्यू उसे खुश कर पाते हैं। वो मानता है कि टीवी इंटरव्यू अस्वाभाविक होते हैं और सात मिनट के कार्यक्रम के लिए उसे अपनी जिंदगी के पाँच घंटे बरबाद करना न्यायसंगत नहीं

लगता। लेकिन फिदेल कास्त्रो और उसके श्रोताओं के लिए सबसे निराशाजनक बात ये है कि सर्वश्रेष्ठ पत्रकार भी, खासकर यूरोपीय, अपने सवालों को यथार्थ के साथ पेश करने की अभिलाषा ही नहीं रखते। अपने देशों की राजनैतिक इच्छाओं और सांस्कृतिक श्रेष्ठता की ग्रंथि से ग्रस्त सवालों के साथ वो ट्रॉफी की आकांक्षा रखते हैं। इस बात के बारे में जानने का जरा भी कष्ट उठाए बिना कि आज का क्यूबा वास्तव में कैसा है, उसके लोगों के सपने और सच्ची निराशाएँ क्या हैं। उनकी जिंदगियों की सच्चाई क्या है। इस तरह वे क्यूबा के आम आदमी को दुनिया से बात करने के अवसर से वंचित करते हैं। और खुद को भी उस पेशेवर उपलब्धि से वंचित कर देते हैं जो फिदेल को ऐसे सवाल पूछकर हासिल की जा सकती थी अपने लोगों की चिंताओं के बारे में उसका क्या कहना है, खासकर बड़े फैसलों के आज के वक्त में उनकी चिंताओं के बारे में, न कि ऐसे सवाल कि दूर स्थित यूरोपीय अनुमानों के बारे में उसके क्या ख्याल हैं।

कुल मिलाकर, फिदेल कास्त्रो को इतने सारे और इतनी विविध परिस्थितियों में सुनने के दौरान, मैंने कई बार खुद से पूछा है कि बातचीत करते रहने का और संवाद में मुब्तिला रहने का उसका उत्साह, क्या भ्रमित कर देने वाली सत्ता-मरीचिका के बीच सच्चाई की संरक्षक डोर को हर कीमत पर थामे रखने की एक जैविक आवश्यकता से ही बना होगा। मैंने सार्वजनिक और निजी, संवादों के कई दौर के दरम्यान खुद से ये पूछा है। ऐसे मौकों पर भी मैं यही सोचता हूँ जब उसके सामने बैठे लोग अपनी स्वाभाविकता खो देते हैं और यथार्थ से दूर किताबी फार्मूलों में ही बात करते हैं। या ऐसे मौके पर जब सच्चाई को उससे दूर रखने की कोशिश की जाती हैं कि उसे खामखाह चिंताओं में न डाला जाए जो उसके पास वैसी ही बहुत सारी हैं, वो ये जानता है। ऐसे ही मौके पर एक अधिकारी से उसने कहा : 'तुम मुझसे सच छिपाते हो कि मुझे कष्ट न हो लेकिन आखिरकार जब मैं उसे जान लूँगा तब सोचो कि इतनी सारी सच्चाईयों के सामने आ जाने से जो असर मुझ पर पड़ेगा उससे तो मैं मर ही जाऊँगा।'

हालाँकि अफसर उससे जो सबसे गंभीर सच्चाई छिपाते हैं वो कमियों के बारे में है। क्योंकि क्रांति को कायम रखने वाली बड़ी उपलब्धियों के बावजूद-राजनैतिक, वैज्ञानिक, खेल, सांस्कृतिक उपलब्धियाँ - इन सबके बावजूद अफसरशाही की एक विराट अयोग्यता रोजमर्रा के जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है। और सबसे बढ़कर घरेलू खुशी को खाए जा रही है। इसी वजह से फिदेल कास्त्रो ने क्रांति के तीस साल बाद भी निजी तौर पर असाधारण तरीके से कुछ मामलों में दखल देना जारी रखा, मिसाल के लिए ब्रेड बनाने में और बीयर के वितरण में।

सड़क पर रहने वाले लोगों के साथ बातचीत में सब कुछ अलग हो जाता है। वहाँ की बातें वास्तविक लगाव की एक खुरदुरी अनौपचारिकता से भरी होती हैं। वहाँ उसका एक ही नाम रह जाता है - फिदेल। लोग उसे घेर लेते हैं और प्रगाढ़ता के संबोधन 'ट्यू' (तुम) में पुकारते हैं। वे उससे बहस करते हैं, उसकी बात काटते हैं, उससे माँग करते हैं - ये एक निर्बाध संचार चैनल है जिसके जरिए सच की तेज धारा बहती रहती है। यूँ अपनी छवि की चमक में घिरा यहाँ एक दुर्लभ मनुष्य है। ये वो फिदेल कास्त्रो है जिसे मैं जानता हूँ।

बातचीत के अनगिनत घंटों के बाद जिससे होते हुए राजनीति का प्रेत नहीं गुजरता है। आडंबरों से दूर, अतृप्त इच्छाओं से भरा, पुराने दौर की शिक्षा पाया हुआ, सावधानी से शब्द चुनता, सादे आचरण वाला, और साधारणता से न निकले किसी भी विचार को ग्रहण कर पाने में असमर्थ। उसका सपना है कि उसके वैज्ञानिक कैंसर का इलाज ढूँढ़ लेंगे। अपने मुख्य शत्रु से 84 गुना छोटे और ताजे पानी से खाली द्वीप में उन्होंने वैश्विक शक्ति वाली विदेश नीति बना ली है। उसकी लगभग रहस्य भरी मान्यता है कि मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि है अंतःकरण का समुचित निर्माण। उसका मानना है कि नैतिक प्रेरणाओं में भौतिकतावाद की अपेक्षा दुनिया को बदलने और इतिहास को आगे ले जाने की क्षमता है। मैं मानता हूँ कि फिदेल हमारे समय के महानतम आदर्शवादी में से एक है, और हो सकता है कि ये उसका सबसे बड़ा गुण हो, हालाँकि यही उसका सबसे बड़ा खतरा भी रहा है।

कई बार देर रात गए मैंने उसे अपने घर में पाया है, दिन भर की अंतहीन गतिविधियों का जिक्र करते हुए। कई बार मैंने उससे पूछा है कि और क्या चल रहा है। और एक से ज्यादा बार उसने मुझे जवाब दिया है : 'बहुत बढ़िया। हमारे सारे जलाशय भरे हुए हैं।' मैंने उसे रेफ्रिजरेटर खोलकर चीज का टुकड़ा खाते हुए देखा है। नाश्ते के बाद अब जाकर शायद कोई कौर उसके मुँह में गया है। मैंने उसे मेक्सिको में अपनी एक दोस्त को फोन करते देखा, उसे एक पसंदीदा डिश की रेसिपी पूछने के लिए। काउंटर पर झुककर मैंने उसे रेसिपी लिखते हुए देखा है। वहाँ पर जहाँ रात के खाने के बर्तन अनधुले रखे हैं। टीवी पर कोई एक प्राचीन गीत गा रहा है, 'लाइफ इज ऐन एक्सप्रेस ट्रेन दैट ट्रैवल्स थाउजंड्स ऑफ लीग्स।' एक रात जब वो छोटी चम्मच से थोड़ा थोड़ा लेकर वानिला आइसक्रीम खा रहा था, मैंने देखा कि वो इतने सारे लोगों की नियतियों के भार से इतना दबा हुआ है, खुद से इतना पृथक कि एक पल के लिए वो मुझे उस आदमी से बिल्कुल अलग लगा जो वो हमेशा रहा है। उस समय मैंने उससे पूछा कि इस दुनिया में वो सबसे ज्यादा क्या करना चाहेगा, और उसने तत्काल जवाब दिया : किसी नुक्कड़ पर मटरगश्ती, और क्या।